पाठ — 3.1

EPPA77

माटीवाली

विद्यासागर नौटियाल

जीवन परिचय

जाने माने साहित्यकार विद्यासागर नौटियाल का जन्म 20 सितम्बर] 1933 में टिहरी के मालीदेवल गाँव में हुआ। 13 साल की उम्र में शहीद नागेन्द्र सकलानी से प्रभावित होकर सामंतवाद विरोधी प्रजामंडल से जुड़ गए। रियासत ने उन्हें टिहरी के आज़ाद होने तक जेल में रखा। वे वन आंदोलन, चिपको आंदोलन के साथ पहली कविता 'भैस का कट्या' 1954 में इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका कल्पना में प्रकाशित हुई। उन्होंने उपन्यासों, कहानियों के साथ ''मोहन गाता'' जाएगा जैसा आत्मकथ्य भी लिखा। अब तक उनके छह उपन्यास और तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। ''यमुना के बागी बेटे'' शीर्षक से आया उनका उपन्यास एक नये विषय के साथ गम्भीर प्रयोग है।

शहर के सेमल का तप्पड़ मोहल्ले की ओर बने आखिरी घर की खोली में पहुँचकर उसने दोनों हाथों की मदद से अपने सिर पर धरा बोझा नीचे उतारा। मिट्टी से भरा एक कंटर। माटी वाली। टिहरी शहर में शायद ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसे वह न जानती हो या जहाँ उसे न जानते हों, घर के कुल निवासी, बरसों से वहाँ रहते आ रहे किराएदार, उनके बच्चे तलक। घर–घर में लाल मिट्टी देते रहने के उस काम को करने वाली वह अकेली है। उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं। उसके बगैर तो लगता है, टिहरी शहर के कई एक घरों में चूल्हों का जलना तक मुश्किल हो जाएगा। वह न रहे तो लोगों के सामने रसोई और भोजन कर लेने के बाद अपने चूल्हे–चौके की लिपाई करने की समस्या पैदा हो जाएगी। भोजन जुटाने और खाने की तरह रोज की एक समस्या। घर में साफ, लाल मिट्टी तो हर हालत में मौजूद रहनी चाहिए। चूल्हे–चौकों को लीपने के अलावा साल–दो साल में मकान के कमरे, दीवारों की गोबरी–लिपाई करने के लिए लाल माटी की जरूरत पड़ती रहती है। शहर से अन्दर कहीं माटाखान है नहीं। भागीरथी और भीलांगना, दो नदियों के तटों पर बसे हुए शहर की मिट्टी इस कदर रेतीली है कि उससे चूल्हों की लिपाई का काम नहीं किया जा सकता। आने वाले नए–नए किराएदार भी एक बार अपने घर के आँगन में उसे देख लेते हैं तो अपने आप माटी वाली के ग्राहक बन जाते हैं। घर–घर जाकर माटी बेचने वाली नाटे कद की एक हरिजन बुढ़िया–माटीवाली।

शहरवासी सिर्फ माटी वाली को नहीं, उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। रद्दी कपड़े को मोड़कर बनाए गए एक गोल डिल्ले के ऊपर लाल, चिकनी मिट्टी से छुलबुल भरा कनस्तर टिका रहता है। उसके ऊपर

किसी ने कभी कोई ढक्कन लगा हुआ नहीं देखा। अपने कंटर को इस्तेमाल में लाने से पहले वह उसके ऊपरी ढक्कन को काटकर निकाल फेंकती है। ढक्कन के न रहने पर कंटर के अन्दर मिट्टी भरने और फिर उसे खाली करने में आसानी रहती है। उसके कंटर को जमीन पर रखते–रखते सामने के घर से नौ–दस साल की एक छोटी लड़की कामिनी दौड़ती हुई वहाँ पहुँची और उसके सामने खड़ी हो गई।

''मेरी माँ ने कहा है, जरा हमारे यहाँ भी आ जाना।''

''अभी आती हूँ।''

घर की मालकिन ने माटी वाली को अपने कंटर की माटी कच्चे आँगन के एक कोने पर उड़ेल देने को कह दिया।

''तू बहुत भाग्यवान है। चाय के टैम पर आई है हमारे घर। भाग्यवान आए खाते वक्त।''

वह अपनी रसोई में गई और दो रोटियाँ लेती आई। रोटियाँ उसे सौंपकर वह फिर अपनी रसोई में घुस गई।

माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का वक्त नहीं था। घर की मालकिन के अंदर जाते ही माटी वाली ने इधर–उधर तेज निगाहें दौड़ाई। हाँ, इस वक्त वह अकेली थी। उसे कोई देख नहीं रहा था। उसने .फौरन अपने सिर पर धरे डिल्ले के कपड़े के मोड़ों को हड़बड़ी में एक झटके में खोला और उसे सीधा कर दिया। फिर इकहरा खुल जाने के बाद वह एक पुरानी चादर के एक फटे हुए कपड़े के रूप में प्रकट हुआ।

मालकिन के बाहर आँगन में निकलने से पहले उसने चुपके से अपने हाथ में थामी दो रोटियों में से एक रोटी को मोड़ा और उसे कपड़े पर लपेटकर गाँठ बाँध दी। साथ ही अपना मुँह यों ही चलाकर खाने का दिखावा करने लगी। घर की मालकिन पीतल के एक गिलास में चाय लेकर लौटी। उसने वह गिलास बुढ़िया के पास जमीन पर रख दिया।

''ले, सद्दा–बासी, साग कुछ है नहीं अभी। इसी चाय के साथ निगल जा।''

माटी वाली ने खुले कपड़े के एक छोर से पूरी गोलाई में पकड़कर पीतल का वह गरम गिलास हाथ में उठा लिया। अपने होंठों से गिलास के किनारे को छुआने से पहले, शुरू–शुरू में उसने उसके अन्दर रखी गरम चाय को ठंडा करने के लिए सू–सू करके, उस पर लंबी–लंबी फूँकें मारीं। तब रोटी के टुकड़ों को चबाते हुए धीरे–धीरे चाय सुड़कने लगी।

''चाय तो बहुत अच्छा साग हो जाती है ठकुराइनजी।''

''भूख तो अपने में एक साग होती है बुढ़िया। भूख मीठी कि भोजन मीठा?''

''तुमने अभी तक पीतल के गिलास सँभालकर रखे हैं। पूरे बाजार में और किसी घर में अब नहीं मिल सकते ये गिलास।''

''इनके खरीदार कई बार हमारे घर के चक्कर काटकर लौट गए। पुरखों की गाढ़ी कमाई से हासिल की गई चीजों को हराम के भाव बेचने को मेरा दिल गवाही नहीं देता। हमें क्या मालूम कैसी तंगी के दिनों में अपनी जीभ पर कोई स्वादिष्ट, चटपटी चीज़ रखने के बजाय मन मसोसकर दो–दो पैसे जमा करते रहने के बाद खरीदी होंगी उन्होंने ये तमाम चीजें, जिनकी हमारे लोगों की नज़रों में अब कोई कीमत नहीं रह गई है। बाज़ार में जाकर पीतल का भाव पूछो ज़रा, दाम सुनकर दिमाग चकराने लगता है। और ये व्यापारी हमारे घरों से हराम के भाव इकट्ठा कर ले जाते हैं, तमाम बर्तन–भाँड़े। काँसे के बरतन भी गायब हो गए हैं, सब घरों से।''

''इतनी लंबी बात नहीं सोचते बाकी लोग। अब जिस घर में जाओं वहाँ या तो स्टील के भाँडे दिखाई देते हैं या फिर काँच और चीनी मिट्टी के।''

''अपनी चीज का मोह बहुत बुरा होता है। मैं तो सोचकर पागल हो जाती हूँ कि अब इस उमर में इस शहर को छोड़कर हम जाएँगे कहाँ।''

''ठकुराइन जी, जो जमीन–जायदादों के मालिक हैं, वे तो कहीं न कहीं ठिकाने पर जाएँगे ही। पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा! मेरी तरफ देखने वाला तो कोई भी नहीं।''

चाय खत्म कर माटी वाली ने एक हाथ में अपना कपड़ा उठाया, दूसरे में खाली कंटर और खोली से बाहर निकलकर सामने के घर में चली गई।

उस घर में भी 'कल हर हालत में मिट्टी ले आने' के आदेश के साथ उसे दो रोटियाँ मिल गईं। उन्हें भी उसने अपने कपड़े के एक–दूसरे छोर में बाँध लिया। लोग जानें तो जानें कि वह ये रोटियाँ अपने बुड्ढे के लिए ले जा रही है। उसके घर पहुँचते ही अशक्त बुड्ढा कातर नज़रों से उसकी ओर देखने लगता है। वह घर में रसोई बनने का इंतजार करने लगता है। आज वह घर पहुँचते ही तीन रोटियाँ अपने बुड्ढे के हवाले कर देगी। रोटियों को देखते ही चेहरा खिल उठेगा बुड्ढे का।

साथ ही ऐसा ही बोल देगी, ''साग तो कुछ है नहीं अभी।''

और तब उसे जवाब सुनाई देगा, ''भूख मीठी कि भोजन मीठा ?''

उनका गाँव शहर के इतना पास भी नहीं हैं। कितना ही तेज चलो फिर भी घर पहुँचने में एक घंटा तो लग ही जाता है। रोज़ सुबह निकल जाती है वह अपने घर से। पूरा दिन माटाखान में मिट्टी खोदने, फिर विभिन्न स्थानों में फैले घरों तक उसे ढोने में बीत जाता है। घर पहुँचने से पहले रात घिरने लगती है। उसके पास अपना कोई खेत नहीं । जमीन का एक भी टुकड़ा नहीं। झोपड़ी, जिसमें वह गुजारा करती है, गाँव के एक ठाकुर की जमीन पर खड़ी है। उसकी जमीन पर रहने की एवज में उस भले आदमी के घर पर भी माटी वाली को कई तरह के कामों की बेगार करनी होती है।

नहीं, आज वह एक गठरी में बदल गए अपने बुड्ढे को कोरी रोटियाँ नहीं देगी। माटी बेचने से हुई आमदनी से उसने एक पाव प्याज़ खरीद लिया। प्याज़ को कूटकर वह उन्हें जल्दी–जल्दी तल लेगी। बुड्ढे को पहले रोटियाँ दिखाएगी ही नहीं। सब्जी तैयार होते ही परोस देगी उसके सामने दो रोटियाँ। अब वह दो रोटियाँ भी नहीं खा सकता। एक ही रोटी खा पाएगा या हद से हद डेढ़। अब उसे ज़्यादा नहीं पचता। बाकी बची डेढ़ रोटियों से माटी वाली अपना काम चला लेगी। एक रोटी तो उसके पेट में पहले ही जमा हो चुकी है। मन में यह सब सोचती, हिसाब लगाती हुई वह अपने घर पहुँच गई।

उसके बुड्ढे को अब रोटी की कोई ज़रूरत नहीं रह गई थी। माटीवाली के पाँवों की आहट सुन कर हमेशा की तरह आज वह चौंका नहीं। उसने अपनी नजरें उसकी ओर नहीं घुमाईं। घबराई हुई माटी वाली ने उसे छूकर देखा। वह अपनी माटी को छोड़कर जा चुका था।

टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब ने उससे पूछा कि वह रहती कहाँ है?

''तुम तहसील से अपने घर का प्रमाणपत्र ले आना।''

''मेरी जिनगी तो इस शहर के तमाम घरों में माटी देते हुए गुज़र गई साब।''

''माटी कहाँ से लाती हो ?''

''माटाखान से लाती हूँ माटी।''

''वह माटाखान चढ़ी है तेरे नाम ? अगर है तो हम तेरा नाम लिख देते हैं।''

''माटाखान तो मेरी रोज़ी है साहब।''

''बुढ़िया हमें जमीन का कागज़ चाहिए, रोजी का नहीं।''

''बाँध बनने के बाद मैं क्या खाऊँगी साब ?''

''इस बात का फैसला तो हम नहीं कर सकते। वह बात तो तुझे खुद ही तय करनी पड़ेगी।''

टिहरी बाँध की दो सुरंगों को बंद कर दिया गया है। शहर में पानी भरने लगा है। शहर में आपाधापी मची है। शहरवासी अपने घरों को छोड़कर वहाँ से भागने लगे हैं। पानी भर जाने से सबसे पहले कुल श्मशान घाट डूब गए हैं।

माटी वाली अपनी झोपड़ी के बाहर बैठी है। गाँव के हर आने–जाने वाले से एक ही बात कहती जा रही है – ''गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।''

शब्दार्थ

कंटर – कनस्तर; **डिल्ले** – सिर पर बोझा ढोने के लिए कपड़े से बनाई गई गद्दी; (गुँडरी) **माटाखान** – लिपाई–पुताई के लिए मिट्टी निकालने वाली जगह; **तंगी** – अभाव, गरीबी; **एवज** – बदले; **पुनर्वास** – पुनः बसाना; **अशक्त** – असहाय/कमजोर; **आपाधापी** – भागदौड़/हलचल; **बेगार** – बिना पैसों के काम करना।

अभ्यास

पाठ से

1. माटीवाली के बिना टिहरी शहर के कई घरों में चूल्हों तक का जलना क्यों मुश्किल हो जाता था?
2. माटीवाली का कंटर किस प्रकार का था?
3. माटीवाली का एक रोटी छिपा देना उसकी किस मनःस्थिति की ओर संकेत करता है?
4. घर की मालकिन ने पीतल के गिलासों को अभी तक संभालकर क्यों रखा था?
5. माटीवाली और मालकिन के संवाद में व्यापारियों की कौन सी प्रवृत्ति का उल्लेख किया गया था?
6. कहानी के अंत में लोग अपने घरों को छोड़कर क्यों जाने लगे थे?

पाठ से आगे

1. (क) बाँध, सड़क व अन्य सरकारी निर्माण कार्य होने पर स्थानीय लोगों को किस–किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है? चर्चा करके लिखिए।

   (ख) इस प्रकार के विकास कार्यों के क्या–क्या फायदे होते हैं? अपने विचार लिखिए।

2. पहले के जमाने में मिट्टी का उपयोग किन–किन कामों में होता था तथा वर्तमान समय में इसका उपयोग आप कहाँ–कहाँ देखते हैं ? अंतर बताते हुए लिखिए ।
3. बाँध बन जाने के बाद माटीवाली का शेष जीवन कैसे बीता होगा? कल्पना करके लिखिए।
4. माटीवाली की तरह और भी कई लोग हैं जिनके पास रहने के लिए अपनी जगह नहीं होती और न ही पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन। ऐसे लोगों के लिए सरकार को क्या–क्या उपाय करने चाहिए, शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।
5. ऐसा क्यों होता जा रहा है कि आजकल पीतल, काँसे, एल्यूमिनियम के बर्तनों की बजाय घरों में ज्यादातर काँच, चीनी मिट्टी, मेलामाईन और प्लास्टिक से बने बर्तनों का इस्तेमाल होने लगा है? स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं रोजगार आदि की दृष्टि से इसके नुकसान व फायदों पर अपने विचार लिखिए।
6. 'मृणशिल्प कला' अर्थात मिट्टी से कलाकृतियाँ बनाना

EPY68U

(क) आप अपने आसपास इस तरह की कलाकृतियाँ कहाँ–कहाँ देखते हैं? तथा ये भी पता कीजिए कि इस कला की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

(ख) आपके शहर, राज्य के कुछ ऐसे कलाकारों के नाम बताइए जिन्होंने मृणशिल्प कला के क्षेत्र में प्रदेश को पहचान दिलाई हो।

भाषा के बारे में

1. 'ई', 'इन' और 'आइन' प्रत्ययों का इस्तेमाल प्रायः स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए किया जाता है। निम्न उदाहरणों को समझते हुए तालिका में निम्न प्रत्ययों से बने अन्य शब्द लिखिए–

	'ई' प्रत्यय	'इन' प्रत्यय	'आइन' प्रत्यय
उदा0	लड़की	मालकिन	पंडिताइन

2. पाठ में आए निम्न मुहावरों के अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) दिल गवाही नहीं देता।

(ख) मन मसोसकर रह जाना।

(ग) कातर नज़रों से देखना।

(घ) चेहरा खिल उठना।

(ङ) दिमाग चकराने लगना।

3. (क) निम्नांकित तीनों वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

(अ) मिट्टी से भरा एक कंटर।

(ब) उस काम को करनेवाली वह अकेली है।

(स) उसका प्रतिद्वन्द्वी कोई नहीं।

आप पाएँगे कि– इनके पढ़ने मात्र से ही इनका (प्रचलित) अर्थ आसानी से समझ में आता है।

इसे शब्द की अभिधा शक्ति के नाम से जाना जाता है।

(ख) नीचे दिए गए इन वाक्यों को भी पढ़िए–

(अ) भूख तो अपने में एक 'साग' होती है।

(ब) वह अपनी 'माटी' को छोड़कर जा चुका था।

(स) गरीब आदमी का 'श्मशान' नहीं उजड़ना चाहिए।

उपरोक्त तीनों वाक्यों में साग, माटी और श्मशान से तात्पर्य क्रमशः खाद्य सामग्री, पंचतत्व से बने शरीर और 'घर' से है।

इस प्रकार इन वाक्यों को पढ़कर उनके अर्थ पर यदि हम विचार करें तो पाते हैं कि वाक्य के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) प्रकट होते हैं। इसे 'लक्षणा' शक्ति के नाम से जाना जाता है।

सहपाठियों के साथ बैठकर अभिधा और लक्षणा शक्ति के पाँच–पाँच वाक्यों को पाठ्यपुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए एवं स्वयं भी रचना कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. अपने आस–पास रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति अथवा कलाकार से मिलिए जो मिट्टी के बर्तन या मूर्तियाँ आदि बनाने का कार्य करता है। उससे साक्षात्कार करके निम्न बिन्दुओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए–

   - ये लोग कच्ची सामग्री कहाँ से जुटाते हैं?
   - कलाकृति/बर्तन बनाने से पूर्व मिट्टी तैयार करने की क्या प्रक्रिया अपनाते हैं?
   - एक कलाकृति तैयार करने की पूरी प्रक्रिया (बनाना, पकाना, रँगना इत्यादि) क्या–क्या होती है?
   - निर्मित सामग्री को वे कहाँ–कहाँ बेचते हैं?
   - इस व्यवसाय से प्राप्त आय, क्या उनके जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त है या नहीं?
   - उन्हें किस–किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

2. गंगा नदी को ''भागीरथी'' कहे जाने के पीछे जो प्रचलित पौराणिक कथा है, उसे अपने शिक्षक या बड़ों से जानने का प्रयास कीजिए और लिखिए।

EQGXC5